

प्रसिद्ध
सचित्र कहानियां
विक्रम और बेताल



MAPLE KIDS

घमंडी विद्वान

जैसे ही बेताल को पेड़ से उतारकर विक्रमादित्य ने अपनी यात्रा शुरू की, बेताल ने अपनी कहानी शुरू कर दी। बेताल की कोशिश थी कि राजा हारकर उसे छोड़ दे, पर राजा विक्रमादित्य भी अपनी बात के पक्के थे। यह कहानी एक किसान के पुत्र की है जो बड़ा होकर महाकवि बना।

रामपुर में एक गरीब किसान के घर श्रीचरण का जन्म हुआ था। किसान पिता ने श्रीचरण को खेती के गुर सिखाने का हर संभव प्रयास किया पर उसका मन खेती की जगह दर्शन और कविता सीखने में था। श्रीचरण बहुत मेधावी था। दस वर्ष का ज्ञान उसने तीन वर्ष में ही सीख लिया। उच्च शिक्षा के लिए शिक्षक उसे शहर के बड़े विद्यालय में भेजना चाहते थे, पर श्रीचरण के पिता पैसे की कमी के कारण उसे आगे नहीं पढ़ा सके। श्रीचरण गांव में ही रहकर कविताएं और गाने लिखने लगा।

एक दिन एक प्रसिद्ध कवि उसी गांव से गुजर रहे थे। माँके का लाभ उठाकर शिक्षक ने श्रीचरण की मुलाकात उस प्रसिद्ध कवि से करवा दी। कवि ने श्रीचरण की प्रतिभा की बहुत तारीफ की और उसे पंडित महानंदा के पास जाकर कविता लिखने की कला सीखने की सलाह दी। पंडित महानंद के माध्यम से राजा के दरबार में पहुंचने की पूरी संभावना थी।



श्रीचरण यह सब जानकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसे पता चला कि पंडित महानंद उसके गांव के धनी जमींदार किशनचंद के दूर के रिश्तेदार हैं। वह उनके पास गया और उनसे परिचय पत्र लिखने का अनुरोध किया। किशनचंद एक भले व्यक्ति थे और श्रीचरण की प्रतिभा का

उन्हें पता भी था। फिर भी उन्होंने कहा, “क्षमा करना भई, पंडित महानंद उसूल के बहुत पक्के हैं। यदि तुम परिचय पत्र लेकर जाओगे तो वे तुम्हें बिना मिले वापस भेज देंगे। इसलिए मेरी राय में तुम अपनी सर्वश्रेष्ठ कृतियों को लेकर जाओ और उन्हें प्रभावित करने को कोशिश करो। यदि वे प्रभावित हो गए तो तुम्हें अपना शिष्य जरूर बना लेंगे।”

श्रीचरण समझ गया कि पंडित महानंद को प्रभावित करना कोई आसान काम नहीं है। वह घर गया और पंडित जी को प्रभावित करने के लिए लिखने लगा। एक महीने तक लगातार मेहनत करने के बाद वह कृष्ण भगवान पर कविता लिखने में सफल हो गया। अपनी कविता का नाम रखा ‘श्रीकृष्ण लीलामृत’।

एक शुभ दिन वह पंडित महानंद के घर के लिए निकल पड़ा। पंडित के घर पहुंचकर उसने देखा कि पंडित जी अपने घर की सीढ़ियों पर बैठे हैं। उनके हाथ में एक कागज है और एक शिष्य उनके पैर के पास बैठा उन्हें ध्यान से सुन रहा था। श्रीचरण भी सुनने लगा।

पंडित महानंद उसकी लिखी कविता की कठोर शब्दों में समालोचना कर रहे थे। ऐसा लग रहा था कि शिष्य अभी रो देगा। शायद उसने अभी-अभी कविता लिखने की कोशिश की थी।

श्रीचरण खुद को रोक नहीं सका। उसने पंडित जी का अभिवादन किया और बोला, “एक कमल हालांकि कीचड़ में खिलता है पर हमें पहले उसकी सुंदरता की प्रशंसा करनी चाहिए।” श्रीचरण का तात्पर्य था कि कविता की प्रशंसा करके उसकी समालोचना करनी चाहिए।

पंडित महानंद आगबबूला होकर बाले, “तुमने मुझे बीच में टोका कैसे? तुम इस प्रकार से मुझसे बात कैसे कर सकते हो? क्या तुम मुझसे अधिक जानते हो?”

श्रीचरण ने विनम्र भाव से कहा, “मैं आपकी शरण में आया हूँ और आपका शिष्य बनना चाहता हूँ।” पंडित जी नाराज तो थे ही, उन्होंने उसे शिष्य बनाने से मना कर दिया। श्रीचरण भारी मन से दुखी होकर वापस लौट आया।

अपने गांव पहुंचकर वह सीधा किशनचंद के पास गया और ‘श्रीकृष्ण लीलामृत’ की पांडुलिपि उन्हें देकर बोला, “मुझे अब यह नहीं चाहिए। पंडित जी ने मुझे वापस भेज दिया।” किशनचंद ने दुखी श्रीचरण का मनोबल बढ़ाने की बहुत कोशिश की पर कोई लाभ नहीं हुआ।

किशनचंद ने वह पांडुलिपि पंडित महानंद के पास भेज दी। पंडित जी ने जब ‘श्रीकृष्ण लीलामृत’ को देखा तो बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने श्रीचरण को एक पत्र लिखा जिसमें उसे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार करने की बात लिखी थी।

श्रीचरण पत्र पाकर गद्गद हो गया। कुछ सालों में वह प्रसिद्ध कवि बन गया और अपने पंडित

महानंद के माध्यम से वह राजा के दरबार में भी पहुंच गया।

कहानी सुनाकर बेताल ने राजा से पूछा, “राजन! पंडित महानंद जो आरम्भ में इतने घमंडी थे, उन्होंने बाद में श्रीचरण को अपने शिष्य के रूप में क्यों स्वीकार कर लिया?”

राजा विक्रमादित्य ने कहा, “पंडित महानंद बहुत बड़े विद्वान थे। वह जानते थे कि शिष्य की रचना में गलतियां बताकर ही वे शिष्य को सुधार पाएंगे। उस दिन वे शिष्य को उसके भले के लिए ही डांट रहे थे। श्रीचरण की कविता बहुत अच्छी थी। एक विद्वान होने के कारण पंडित महानंद श्रीचरण की प्रतिभा को नजरअंदाज नहीं कर पाए। उन्होंने श्रीचरण को एक योग्य शिष्य के रूप में स्वीकार कर लिया और बाद में राजा से भी परिचय करवा दिया।”

बेताल ने राजा विक्रमादित्य के विवेक की प्रशंसा करी और उत्तर सही होने के कारण वापस पीपल के उड़कर पेड़ पर चला गया।